विलुप्त होती रामलीला परंपरा: एक सैद्धांतिक विवेचन

प्रस्तावना: भारत में रामलीला की गायन नृत्य और नाट्य शैलियों की परंपरा सबसे पहले हिन्दी क्षेत्र में शुरू हुई| उसके बाद यह संपूर्ण भारतवर्ष और दक्षिण एशिया से होती हुई लगभग पूरी दुनिया में फ़ैल गई| इंदुजा अवस्थी ने अपनी पुस्तक 'रामलीला परंपरा और शैलियाँ' में लीला की अर्थवत्ता को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि "संभवतः ईश्वर के अवतारों का सांसारिक चरित प्रस्तुत करने की परंपरा ही आगे चलकर नाटकीय संकल्पना से जुड़ गई और इसलिए अभिनटन रूपों तथा कृष्ण और गोपियों के रास नृत्य की संकल्पना से मिलकर कृष्ण के चरिताभिनय को प्रस्तुत करने वाला नाट्यरूप रासलीला के नाम से प्रसिद्ध हुआ और राम के चरिताभिनय का नाम रामलीला हो गया| अतः ये नाम एक-दूसरे के प्रभावस्वरूप नहीं, वरन उस समय तक लीला का अर्थ विस्तार नाटकीय प्रस्तुतीकरण के अर्थ में हो जाने के कारण सहज ही रख लिए गए|" ईश्वर के इन अवतारों का यह लोक-लीला रूप बेहद मनभावन, प्रेरणादायी और लोकरंजनकारी है|

शब्दकोश में लीला शब्द के अनेक अर्थ-'खेल', क्रीड़ा, विनोद, आनन्द, मनोरंजन आदि प्राप्त होते हैं| स्त्रियों की विलासपरक क्रियाओं को भी लीला कहा गया है-"लीला विलास क्रिययोः|"1

आचार्य धनंजय ने स्त्रियों के स्वाभाविक दस अलंकारों में लीला को प्रथम माना है| दशरूपक के दूसरे प्रकाश में लीला को परिभाषित करते हुए कहा गया है "प्रियानुकरणम लीला मधुरांग विचेष्टितैः|"2

अर्थात प्रियतम का अनुकरण ही लीला है| ऐसा करते हुए आंगिक चेष्टाएँ मधुर होनी चाहिए| लीला की लगभग इसी तरह की व्याख्या उज्ज्वल नीलमणि में भी प्राप्त होती है-"प्रियतम के दूर होने पर सखियों के समक्ष अपने चित्त विनोद के लिए नायिका द्वारा वार्तालाप, वेश, गति, हास्य, देखने आदि की क्रिया द्वारा प्राणेश्वर की अनुकृति को लीला कहा गया है|"3

साहित्यदर्पणकार आचार्य विश्वनाथ ने लीला को इस प्रकार से परिभाषित किया है-"अंगैर्वेषरलंकारैः प्रेमाभिर्वचनैरपि| प्रीतिः प्रयोजितैर्लीलाप्रियस्यानुकृतिम विदुः|"4

प्रेमाधिक्य वश, अंगों, वेशों, अलंकारों तथा प्रीतिपूर्ण वचनों से प्रियतम के अनुकरण को लीला कहते हैं| भक्तिकाल तक आते-आते लीला का मुख्य अर्थ तो वही रहा पर उसका संदर्भ बदल गया| प्रियतम के वाचिक लौकिक पुरुष के स्थान पर परमात्मा की प्रतिष्ठा हुई| परमात्मा की लीला को उनका विलास माना गया-'लीला विलास यस्यैव|'

आचार्य वल्लभ ने सृष्टि रचना का प्रयोजन ही लीला को ठहराया है| लीला सिर्फ लीला के लिए है| आचार्य ने 'लीलानाम विलासेच्छा' के रूप में परमात्मा के विलास की इच्छा को लीला कहा| परमात्मा की कोई इच्छा नहीं होती फिर भी वह सृष्टि रचना में प्रवृत्त होता है| इसका कोई प्रयोजन नहीं होता बल्कि परमात्मा का यह स्वभाव है| आदिकाव्य रामायण को रामलीला का भी आदि और आधारग्रंथ माना गया है| इसी परंपरा में

हनुमन्नाटक, प्रसन्नराघव, अनर्घराघव, महानाटक, बालरामायण आदि रामलीला नाटक लिखे गए| इन सभी नाटक ग्रन्थों का एकमात्र आधार वाल्मीकि रामायण ही रहा| काशी में तुलसीदास से पहले रामलीला का आधार ग्रंथ वाल्मीकि रामायण बताया जाता है| भारतीय भाषाओं में लिखी गई रामायणों पर इसका प्रभाव स्पष्ट है| कुछ परिवर्तनों के साथ उत्तरी पश्चिमी तथा मध्य भागों में भी यह कथा मिल जाती है| आख्यानों के साथ इसकी अभिव्यक्ति अनेक कला रूपों तथा प्रदर्शन शैलियों में हुई|

रामलीला और भारतीय लोक: लोक मन में राम के मर्यादा पुरुषोत्तम, धीरोदात्त और संघर्षशील चरित्र की व्याप्ति और स्वीकृति का अंदाजा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि हमारे यहाँ असंख्य स्त्री-पुरुषों के नाम के आदि, मध्य या अंत में 'राम' लगा हुआ मिलता है| जैसे-रामजनम, रामचरण, राममूर्ति, रामकुमार, राजाराम, जयराम, बाबूराम, रामकली, रामदुलारी, रामरती आदि| इसी प्रकार गाँवों, कस्बों और शहरों के नाम 'राम' से जुड़कर शोभा पाते रहे हैं| जैसे-रामपुर, रामगढ़, रामनगर, रामबाड़ा, राम बाज़ार, श्रीरामपुर इत्यादि| आज तक तो यह भी देखने में आता है कि लोक में प्रायः किसी सामुदायिक अथवा पारिवारिक आयोजन की शुरुआत में 'जयश्रीराम' बोलकर ही कार्य का आरंभ किया जाता है| लोग एक-दूसरे को अभिवादन करते समय भी 'राम-राम जी' कहते हुए पाए जाते हैं| यहाँ तक कि दुःख अथवा शोक की अभिव्यक्ति में भी मुँह से 'हे राम' निकलता है| स्त्रियाँ अपने लोकगीतों में 'हरे रामा', 'हो रामा' आदि का टेक लगाते हुए मंगल गीत गाती हैं| लोक जीवन में 'राम कहानी कहना', 'राम बुलावा आ जाना', 'राम रूठ जाना' जैसे ढेर सारे मुहावरे और लोकोक्तियाँ भी राम की इसी व्याप्ति और स्वीकृति को उद्घाटित करती हैं|

शास्त्र और पुराणों में राम का चरित्र तथा उनका जीवन चाहे जैसा भी रहा हो, लोक ने इन्हें अपने ढंग से अपनी रुचियों, आवश्यकताओं और परिस्थितियों के अनुसार स्वीकार किया है| हमें इस तथ्य को समझना होगा कि लोक द्वारा निर्मित और स्वीकृत परंपराओं, जीवन मूल्यों और आदर्शों का संबंध जितना धर्म और आध्यात्म से होता है, उतना ही उसके भौतिक जीवन से भी| लोक की सामाजिक व्यवस्था के संचालन में इनकी भूमिका निर्णायक रहती है| इसके साथ ही यह भी सच है कि लोक अपना मूल्याँकन करने तथा विभिन्न प्रकार के भयों से मुक्ति के लिए परंपराओं, मूल्यों और आदर्शों के साथ-साथ कुछ ऐसे चरित्र को भी स्वीकार कर लेता है, जो उससे विशिष्ट और शक्तिशाली हो| विशेष बात तो यह है कि इन चरित्रों का ढाँचा प्रायः इतिहास और पुराणों से संबंध रखता है, लेकिन उसका रूप-रंग लोक स्वयं निर्धारित करता है| वह इन चरित्रों में कुछ विशेषताएँ भी अपनी ओर से जोड़ता है| भारत के लोक ने राम को भी इसी प्रक्रिया से स्वीकार किया है| लोक समाज में विद्यमान पूजा-प्रणालियों, लोक कलाओं और लोक नाट्य रूपों में इसे आसानी से देखा जा सकता है| इन चरित्रों के जीवन की प्रमुख घटनाओं को लेकर झाँकियाँ भी निकाली जाती हैं|

रामलीला परंपरा: रामकथा के मंचन की परंपरा उतनी ही प्राचीन है जितने स्वयं श्रीराम हैं| साहित्यिक दृष्टि से श्रीराम का काल वाक्ल्मीकि के समकालीन है| राम की यशोगाथा उन्होंने विभिन्न माध्यमों से अपने जीवन काल में सुनी और उसे अपने 'रामायण' काव्य का आधार बनाया| आगे चलकर भरतों, पाठकों, सूतों, मागधों, चारणों, हरबोलों तथा पटियों के माध्यम से चरित-गायन की परंपरा के रूप में यह विधा साहित्य में स्थापित हो गई| सारांश यह है कि उसी समय रामकथा का मंचन 'गाथा परंपरा' के रूप में दरबारों से राजपथ और

गाँव-गलियों तक व्याप्त हो चुका था| रामायण काल के पश्चात वेदव्यास द्वारा लिखित महाभारत में भी रामलीला के मंचन का उल्लेख मिलता है| उनके द्वारा रचित ब्रह्माण्डपुराण के अंतर्गत 'अध्यात्म रामायण' सर्वविदित है ही| सातवीं-आठवीं शताब्दी के नाटककार भवभूति के 'उत्तररामचरितम', 'महावीरचरितं' तथा अन्य नाटक भी रामकथा पर आधारित हैं|

रामलीला के अधिकारी विद्वान श्री भानुशंकर मेहता जी के शब्दों में "रामलीला केवल खेली नहीं जाती, बल्कि व्यापक अर्थ में पढ़ी, सुनी और देखी भी जाती है| रामलीला एक जीवंत अनुभव है| रामलीला एक सांस्कृतिक पर्व है जो 'सत्यमेव जयते जीवृतम' का सन्देश लेकर आता है| वह उद्घोष करता है- 'अरे! समाज के लोगों, याद रखो, झूठ और अन्याय और अत्याचार पर सदा सत्य और न्याय की जीत होती है|' रामलीला समाज के उन्नयन का साधन है|"5

रूसी प्राच्यविद मनीषी विद्वान अलेक्जेंडर सेंकेविच के शब्दों में-"रामायण विश्व साहित्य की उन कृतियों में से है जो विभिन्न जाति के लोगों को समीप लाती है, संहार और अमानुषिकता का विरोध करती है और सामाजिक विषमता को अस्वीकार करती है| रामायण मानवीय मूल्यों से भरपूर महाकाव्य है, जो मनुष्य को श्रेष्ठ प्राणी बनाये रखने के लिए प्रेरित करता है| रामायण के सत्य का पथ भारत के सत्य का पथ है| रामायण जैसी कृतियाँ सक्रिय मानवतावाद का आवाह्न करती हैं, यही कारण है कि उसका महत्त्व राष्ट्रीय संस्कृति की सीमा में बंधा न रहकर विश्व-विराटता का रूप ग्रहण करता है|"6

रामलीला राम के चरित्र और रामकथा पर केन्द्रित एक लोक नाट्य शैली है| उत्तर-भारत में विजयदशमी के अवसर पर इस लोकनाट्य शैली में राम की लीला का मंचन किया जाता है, जिसे रामलीला कहते हैं| भारत के अनेक भागों और भारत के बाहर अनेक देशों में भी रामलीला का मंचन किया जाता है| रामलीला का आदि प्रवर्तक कौन है? यह एक विवादास्पद प्रश्न है| भावुक भक्तों की दृष्टि में यह अनादि है| एक किंवदन्ती के अनुसार त्रेता युग में श्री रामचन्द्र के वनगमनोपरांत अयोध्यावासियों ने चौदह वर्ष की वियोगावधि राम की बाल लीलाओं का अभिनय कर बिताई थी| तभी से रामलीला का प्रचलन शुरू हुआ था| एक अन्य जनश्रुति से यह प्रमाणित होता है कि इसके आदि प्रवर्तक मेधा भगत थे, जो काशी के कतुआपुर मोहल्ले स्थित फुटहे हनुमान के निकट के निवासी माने जाते हैं| एक बार पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी ने इन्हें स्वप्न में दर्शन देकर लीला करने का आदेश दिया ताकि भक्तजनों को भगवान के चाक्षुष दर्शन हो सके| इससे सत्प्रेरणा पाकर इन्होने रामलीला संपन्न कराई| इसके परिणामस्वरूप ठीक भरत मिलाप के मंगल अवसर आराध्यदेव ने अपनी झलक देकर इनकी कामना पूर्ण की| कुछ अन्य लोगों के मतानुसार रामलीला की अभिनय परंपरा के प्रतिष्ठापक गोस्वामी तुलसीदास हैं, इन्होने हिन्दी में जन मनोरंजनकारी नाटकों का अभाव पाकर इसका श्रीगणेश किया| इनकी ही प्रेरणा से अयोध्या और काशी के तुलसीघाट पर पहली बार रामलीला शुरू हुई|

वास्तव में रामलीला लोक नाटक का ही एक रूप है| रामलीला का उदय उत्तर-भारत से माना जाता है| वर्तमान में जिस रामलीला का मंचन किया जाता है, उसकी पटकथा गोस्वामी तुलसीदास रचित महाकाव्य रामचरितमानस की कहानी और संवादों पर आधारित होता है| माना जाता है कि रामलीला का मंचन तुलसीदास के शिष्यों ने सबसे पहले किया था| ऐसा भी कहा जाता है कि उस दौरान काशी नरेश ने रामनगर

में रामलीला करने का संकल्प लिया था, तभी से रामलीला का प्रचलन देश भर में शुरू हुआ| आज गाँवों में रामलीला का मंचन सिर पर पगड़ी पहने और ढोल बजाकर ग्रामीणों को रामलीला के मंचन की सूचना देने की आवाज से किया जाता है| भारत के गाँव-गाँव में सदियों से हो रही रामलीला का मंचन आज सिर्फ गाँवों तक ही नहीं बल्कि शहरों, राज्यों से लेकर विदेशों तक में प्रसिद्ध हो चुका है| भारत में हम जैसे-जैसे शहरों और राज्यों को छूते हैं, वैसे-वैसे रामलीला के अलग-अलग रंग और रूप नज़र आते हैं|

सन 2005 में यूनेस्को में रामलीला को विश्व विरासत घोषित करते हुए यह विवेचना दी कि 500 साल पहले तुलसीदास जी द्वारा स्थापित रामलीला विश्व की ऐसी प्रदर्शकारी कला है जो निरंतर 500 वर्षों से आज तक सतत रूप से मंचित हो रही है| तुलसीदास ने झांकी लीला की लोकप्रियता को देखकर रामचरितमानस की पंक्तियों के आधार पर व्यास परंपरा द्वारा रामलीलाएँ प्रारंभ की| इन रामलीलाओं में लंका और अयोध्या मंच बनाया जाता था जिसके बीच में भी अभिनय का क्षेत्र होता है| दर्शक अयोध्या और लंका मंच के मध्य बने हुए मंच के दोनों ओर बैठते हैं| तुलसीदास ने बारह रामलीला मंडलियों की स्थापना की जिसमें दलित और किन्नरों की रामलीलाएँ भी मंचित की जाती थीं| तुलसीदास ने दलित रामलीला में मेकअप का कार्य स्वयं किया|

रामलीलाओं में दर्शकों द्वारा करतल ध्वनि से राजा रामचन्द्र की जय का उद्घोष लगाया जाता था, यह प्रतीकात्मक रूप से तत्कालीन मुगल राजाओं के विरुद्ध आम जनता का आक्रोश था| तुलसीदास ने मैदानी रामलीलाओं का श्रीगणेश किया जिसमें मैदान में अलग-अलग मंच बनते थे, यथा-अयोध्या, जनकपुर, लंका, किष्किन्धा आदि| इन रामलीलाओं में सभी वर्ग सभी जाति तथा सभी धर्मों के लोग सम्मिलित होते थे| आज भी मैदानी रामलीलाओं की सुदीर्घ परंपरा विद्यमान है| काशी की रामनगर की रामलीला इसका एक बड़ा उदहारण है| इसके अतिरिक्त उरई के कोंच, इटावा के जसवन्तनगर में, मैनपुरी में, कानपुर देहात, अकबरपुर, कानपुर परेड ग्राउंड, रसड़ा बलिया, मुमताजनगर, अयोध्या उत्तर-प्रदेश की प्रमुख मैदानी रामलीलाएँ हैं|

रामलीला की शैलियाँ: रामलीला की देश में प्रचलित शैलियों में अयोध्या शैली, ब्रज शैली, काशी शैली, हाडौती शैली, असमी शैली, मधुबनी शैली, कर्नाटक शैली, पर्वतीय शैली इत्यादि प्रसिद्ध है| बुन्देलखण्ड तथा मध्य भारत क्षेत्र में इसका विकास अखाड़ा, स्वांग तथा नाच शैलियों के माध्यम से हुआ| उत्तर-भारत में मंच सजाकर अभिनय द्वारा रामलीला मंचन का स्वरूप गोस्वामी तुलसीदास के समय विकसित हुआ| वास्तविकता तो यह है कि उस समय रामलीला का मंचन मैदानी, जुलूसी तथा मंचीय त्रिवेणी शैली में था| लीलाएँ मैदान में होतीं, फिर जुलूस बनाकर चलती थीं, और वे अंत में मंचीय स्वरूप ग्रहण कर लेती थीं| राम की कथा नाटक के रूप में मंच पर प्रदर्शित करने वाली रामलीला भी 'हरि अनंत हरि कथा अनन्ता' की तर्ज पर वास्तव में कितनी विविध शैलियाँ हैं, इसका खुलासा इंदुजा अवस्थी ने अपने शोध ग्रन्थ 'रामलीला परंपरा और शैलियाँ' में बड़े विस्तार से किया है| उनके इस शोध ग्रन्थ की विशेषता यह है कि यह शोध किसी पुस्तकालय में बैठकर न लिखा जाकर विषय के अनुरूप मैदानों में घूम-घूम कर लिखा गया है| रामकथा तो ख्याल कथा है किन्तु जिस प्रकार वह पूरे भारतवर्ष की विभिन्न भाषाओं में अभिव्यक्त हुई है तो उस भाषा, उस स्थान और उस समाज की कुछ निजी विशिष्टताएँ भी उसमें अनायास ही समाहित हो गई हैं|

मूक अभिनय: मूक अभिनय संगीतबद्ध हास्य थियेटर है, जिसे रामलीला में भी अपनाया गया है| इसके तहत रामलीला का सूत्रधार रामचरितमानस की चौपाईयों और दोहे गा कर सुनाता है और दूसरे कलाकार बिना कुछ बोले रामायण की प्रमुख घटनाओं का मंचन करते हैं| इस शैली में रामलीला की झांकियां भी दिखाई जाती हैं| इसके बाद पूरे शहर में जुलूस निकाला जाता है| प्रयागराज और ग्वालियर जैसे शहरों में मूक अभिनय शैली में रामलीला का मंचन होता है|

संगीतबद्ध गायन शैली: इस शैली का विकास उत्तराखंड के अल्मोड़ा और कुमाऊँ जिले में हुआ| इस रामलीला की विशेषता यह है कि इसके संवाद क्षेत्रीय भाषा में न होकर ब्रज और खड़ी बोली में गाये जाते हैं, जिसके लिए संगीत की विभिन्न शैलियों का प्रयोग किया जाता है|

रामलीला मंडलियाँ: इसमें पेशेवर कलाकार होते हैं, जो रामलीला का मंचन करते हैं| स्टेज पर रामचरितमानस की स्थापना करके भगवान की वन्दना करते हैं| इसमें सूत्रधार जिसे व्यास कहा जाता है, रामलीला के पहले दिन ही कथा सुनाता है और आगे होने वाली रामलीला का सार गाकर सुनाता है| ये कलाकार मंडलियाँ भारत के कई राज्यों में रामलीला का मंचन करती हैं|

रामलीला का स्वरूप: भारत में आज रामलीला का जो स्वरूप विकसित हुआ है उसके जनक गोस्वामी तुलसीदास ही माने जाते हैं, साथ ही यह भी सच है कि इन सभी रामलीलाओं में रामचरितमानस का गायन, उसके संवाद और प्रसंगों की एक तरह से प्रमुखता रहती है| बाबू श्यामसुन्दर दास हों, कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह हों या फिर आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र सबकी यह मान्यता है कि रामलीला के वर्तमान स्वरूप के उद्धारक, प्रवर्तक और प्रसारक महात्मा तुलसीदास ही हैं| किन्तु यह भी सच नहीं है कि तुलसीदास के पूर्व रामलीला थी ही नहीं, हाँ इतना अवश्य है कि गोस्वामी तुलसीदास के रामचरितमानस के पश्चात् फिर रामलीलाओं का आधार यही रामचरितमानस ही हो गया| राम की बारात निकलने पर उस प्रान्तर के सभी निवासी मानो राजा जनक के पुरवासी बनकर दूल्हे का सत्कार करते हैं, राम-वनगमन के समय राम-लक्ष्मण और सीता के पीछे अश्रु-विगलित जनता अपने को अयोध्यावासी समझती हुई आँसू बहाती चलती है| यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि चाहे रामकथा की महती संकल्पना के कारण हो, चाहे रामचरितमानस की लोक प्रतिष्ठा के कारण हो, रामलीला में दर्शकों का जितना संपूर्ण सहयोग होता है उतना और किसी भी नाट्यरूप में मिल पाना कठिन ही है, और यह तथ्य इस लीला नाटक को एक अभूतपूर्व और सशक्त आयाम देता है|

भगवान् राम की कथा पर आधारित रामलीला नाटक के मंचन की परंपरा भारत में युगों-युगों से चली आई है| लोक नाट्य के रूप में प्रचलित इस रामलीला का देश के विभिन्न प्रान्तों में अलग-अलग तरीके से मंचन किया जाता है| भारत में हर साल सभी जगहों पर रामलीला का आयोजन किया जाता है| यहाँ हिन्दू और मुस्लिम दोनों ही धर्मों को मानने वाले लोग रामलीला में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं| राम नाईक ने रामायण को अद्भुत कथा बताते हुए कहा की राम का व्यक्तित्त्व हिमालय से ऊँचा और समुद्र से भी अधिक गहराई लिए हुए है| इसे सभी ने अपने-अपने ढंग से व्यक्त किया है| पुरानी एवं विलुप्त होती संस्कृति के

माध्यम से रामायण का मंचन एवं नाट्य द्वारा प्रस्तुतीकरण अत्यंत अनुकरणीय है| यह आश्चर्य का विषय है कि इनकी कथाएं इंडोनेशिया तथा थाईलैंड जैसे अन्य देशों में भी प्रचलित तथा लोकप्रिय है| यह नौटंकी एवं कत्थक का संगम दिखाने का अद्भुत प्रयास है| कला के माध्यम से जीवन में सम्मान एवं ऊंचाईयों को भी प्राप्त किया जा सकता है| श्रीराम मर्यादा पुरुषोत्तम थे, उनकी कथा का मंचन मनोरंजन के साथ ही प्रेरणादायक होता है|

देश-विदेश में रामलीला के विविध रूप:

रंगमंचीय दृष्टि से रामलीला तीन प्रकार की है-सचल लीला, अचल लीला तथा स्टेज लीला| काशी नगरी के चार स्थानों में अचल लीलाएँ होती हैं| गोस्वामी तुलसीदास द्वारा स्थापित रंगमंच की कई विशेषताओं में से एक यह भी है कि स्वाभाविकता, प्रभावोत्पादकता और मनोहरता की सृष्टि के लिए अयोध्या, जनकपुर, चित्रकूट तथा लंका आदि अलग-अलग स्थान बना दिए गए थे और प्रत्येक स्थान पर उसी से संबंधित सारी लीलाएँ दिखाई जाती थीं| यह ज्ञातव्य है कि रंगशाला खुली होती थी और पात्रों को संवाद जोड़ने-घटाने में भी बहुत स्वतंत्रता रहती थी| गोस्वामी तुलसीदास के समय राजनीतिक एवं सामाजिक परिस्थितियाँ अत्यंत विषम थीं| भारत में विदेशी आक्रान्ताओं के आने के बाद शासकों ने संस्कृति, कला और साहित्य को नष्ट करने तथा स्व की भावना का मूलोच्छेदन करने करने का प्रयास किया| आस्था पर चोट की गई| मन्दिर और मूर्तियों का भंजन, सांस्कृतिक परंपराओं का विखंडन, प्रजा में जाति-भेद बढ़ाकर समाज का वर्ग-उपवर्ग में विभाजन किया गया तथा मन्दिरों में वंचितों का प्रवेश बंद कराने का योजनबद्ध प्रयास किया गया| इन सबके विरुद्ध सांस्कृतिक जागरण के अग्रदूत गोस्वामी तुलसीदास बने|

गोस्वामी तुलसीदास ने जन-जन तक राम का रक्षक एवं प्रेरक स्वरूप पहुँचाने के लिए रामकथा के दो नये आयाम प्रस्तुत किए| प्रथम यह कि रामकथा को संस्कृत के बजाय जन भाषा में लेखन तथा द्वितीय रामकथा का मंदिरों में विद्वानों द्वारा गायन अथवा प्रस्तुतीकरण कराने के बजाय मैदान में जन समूह के बीच रामलीला का मंचन| तुलसीदास ने अपनी साधना स्थली काशी में असी घाट क्षेत्र में असी की रामलीला प्रारंभ की| इसमें रामजन्म, बाललीला, धनुष यज्ञ तथा राम विवाह की लीलाएं ही होती हैं| तुलसी के पूर्व काशी में चित्रकूट-रामलीला होती थी, जो मेधा भगत द्वारा प्रारंभ की गई थी, ऐसा बाबू श्यामसुन्दर दास मानते थे| तुलसी के द्वारा असी की रामलीला प्रारंभ करने के बाद काशी कुछ ही समय में रामलीला का प्रमुख केंद्र बन गया| वहाँ की रामलीलाओं में प्रमुख है- चित्रकूट की रामलीला, असी की रामलीला, रामनगर की रामलीला, लाट भैरव की रामलीला, नाटी इमली की रामलीला तथा तेजगंज की नकटैया रामलीला|

रामनगर की रामलीला: रामनगर की रामलीला प्रारंभ में काशी नरेश द्वारा राजकोष से पोषित थी| देशी रजवाड़ों की समाप्ति के बाद इसे प्रदेश शासन से अनुदान प्राप्त होने लगा| यह काशी में गंगा के उस पार रामनगर के दस-बारह किलोमीटर की परिधि में अलग-अलग स्थानों पर होती है| प्रत्येक लीला के अनुरूप स्थलों पर ही रामलीला आयोजित होती है तथा जनसमूह पात्रों के साथ चलता है| इसमें राजसी वैभव के साधनों यथा रथ, पताका, घोडा, हाथी का प्राधान्य रहता है| भक्तगण इसे इकतीस दिन की पूरी अवधि में अनुष्ठान के रूप में देखते हैं| प्रत्येक दिन की लीला का आरंभ नारद वाणी के सांस्कृतिक, संगीतमय और

संवाद्पूर्ण गायन तथा आरती से होता है और समापन भी भव्य आरती से होता है| वास्तव में रामलीला लोक नाटक का एक रूप है| इसका उत्स भी उत्तर भारत से ही माना जाता है| वर्तमान में जिस रामलीला का मंचन किया जाता है, उसकी पटकथा गोस्वामी तुलसीदास रचित महाकाव्य रामचरितमानस की कहानी और संवादों पर आधारित है| माना जाता है कि रामलीला का मंचन तुलसीदास के शिष्यों ने सबसे पहले किया| ऐसा भी कहा जाता है कि उस दौरान काशी नरेश ने रामनगर में रामलीला करने का संकल्प लिया था, तभी से रामलीला का प्रचलन देश भर में शुरू हुआ|

रामनगर की रामलीला का ऐतिहासिक महत्त्व है| रामनगर में वर्ष 1830 में पहली बार रामलीला का मंचन किया गया और यह 31 दिनों तक लगातार चलता है| यहाँ पर बनाये गए मंच देखने योग्य होते हैं| रामनगर की रामलीला की सबसे खास बात यह है कि इसके प्रधान पात्र एक ही परिवार के होते हैं| उनके परिवार के सदस्य पीढ़ी दर पीढ़ी रामलीला का मंचन करते आये हैं| यहाँ के अधिकांश मंच स्थायी बने हुए हैं, हालाँकि मंचन के दौरान कुछ अस्थायी केंद्र भी बनाये जाते हैं| आज भी भगवान राम की दिव्य वस्तुएँ काशी नरेश के संरक्षण में प्राचीन बृहस्पति मंदिर में मौजूद है| यही कारण है कि रामनगर की रामलीला दुनिया भर में लोकप्रियता हासिल कर चुका है|

अयोध्या की रामलीला: काशी की ही तरह अयोध्या में ही अनेक रामलीला मंडलियों द्वारा रामलीलाएँ की जाती रही हैं| इनमें महंथ जयरामदास की रामलीला को सबसे अच्छी रामलीला माना जाता है| इधर 20 मई 2004 से अयोध्या शोध संस्थान द्वारा अनवरत रामलीला कार्यक्रम के अंतर्गत देश-विदेश की प्रमुख रामलीलाओं का मंचन करना शुरू किया गया| इसमें रामलीला की विविध शैलियों के दर्शन भी हो जाते हैं| इसमें रामलीला के प्रति आम जनता का आकर्षण और बढ़ा है| अयोध्या मंडली की रामलीला पूरे देश में प्रसिद्ध है| अयोध्या की रामलीला की विशेषता यह है कि यहाँ एक विशाल मंच बनाकर पात्र संवादों को गीत के माध्यम से बोलते हैं| सिर्फ इतना ही नहीं कत्थक के माध्यम से भी कलाकारों की ओर से रामकथा का वर्णन किया जाता है| अयोध्या में रामलीला की बढ़ती लोकप्रियता को देखते हुए राज्य सरकार ने यहाँ अंतर्राष्ट्रीय रामलीला केंद्र के निर्माण कराये जाने की स्वीकृति भी दी है| तुलसीदास द्वारा अयोध्या में स्थापित रामलीला का स्वरूप अब वैसा नहीं रहा| उसकी एक प्रमुख विशेषता यह थी कि धनुषयज्ञ की रामलीला में राजा जनपद का धनुषयज्ञ संबंधी घोषणापत्र बन्दीजनों द्वारा अंग्रेजी सहित अनेक भाषाओं में पढ़ा जाता था ताकि दूर-दूर देशान्तरों से आये राजागण उसे भली-भांति समझ सकें| अब अयोध्या में उसके अतिरिक्त अनेक रामलीला-मंडलियों द्वारा रामलीलाएँ की जा रही हैं|

कोंच की रामलीला: कोंच में रामलीला का इतिहास लगभग एक सौ साठ वर्ष पुराना है| पुराने रामलीला भवन में लगे एक शिलालेख के अनुसार इसकी स्थापना विक्रम संवत 1908 तद्नुसार 1850-1851 ई. में हुई थी| आगे चलकर संपूर्ण कोंच नगर रामलीला की लीलाभूमि बनायी गई| प्रत्येक दिशा में रंगमंच बनाये गये तथा हर गली-मुहल्ले में मूर्तियों का स्वागत वन्दन-टीका सब इस प्रकार होने लगा मानो साक्षात भगवान स्वागती के घर-द्वार आ गये हों| स्वागत की इस परंपरा में न हिन्दू-मुस्लिम का भेदभाव था, न जाति-बिरादरी का, न विधवा-सधवा का| भगवान के द्वार सभी के लिए खोल दिए गए| हर वर्ग ने भगवान का स्वागत किया|

जिस मोहल्ले में भगवान का विमान लीला के लिए जाता था, उसमें सड़क-गली के दोनों ओर चूना-कलई का रेखांकन, किनारे-किनारे ऊपर कागज की झंडियों-पताकाओं, लता-पत्रों के बन्दनवार-तोरण तथा रात्रि के अन्धकार को दूर करने के लिए हंडे तथा गैस की लालटेनों की व्यवस्था की जाती थी| बाद में म्युनिसिपल बोर्ड के गठन के उस संपूर्ण गश्त-मार्ग पर लालटेन स्टैंड बना दिए गए थे, जिनमें लोहे के पाइप के ऊपर काँच के चौखटे से लालटेनें जलाई जाती थीं|

जब भगवान का विमान चलता था, उसके आगे हंडा-गैस की लालटेनों तथा स्थानीय आतिशबाजों द्वारा 'मेहताब' की रौशनी की जाती थी| इस वातारवरण में लगभग तीन सप्ताह तक पूरा 'कोंच नगर' राममय हो जाता था| एक अद्‌भुत धार्मिक, संगीतमय, उल्लासमय वातावरण का निर्माण हो जाता था| रामलीला के आयोजन की तिथियाँ लगभग एक माह पूर्व घोषित होकर उसकी मुनादी सार्वजनिक स्थानों पर पर्चे-वितरण करके दे दी जाती थी| इतनी सूचना पर ही दर्शक उस दिशा में लीला देखने मुड़ जाते थे| 1927 ई. में रामलीला के इतिहास में एक विशेष मोड़ आया| रामलीला की बढ़ती वित्तीय आवश्यकताओं तथा सीमित टीका-राशि की प्राप्तियों के कारण, आर्थिक संसाधनों की तलाश की गई| कोंच गल्ला व्यापारियों की मंडी थी| कोंच का आर्थिक ढाँचा मुख्यतः गल्ला व्यापार पर ही टिका है| गल्ला-व्यापारी इस बात पर सहमत हो गये कि वे मंडी में माल की खरीद के समय एक मामूली प्रतिशत धनराशि धार्मिक-कार्यों हेतु काटकर कटौती की राशि को 'धर्मदा निधि' बनाकर धर्म की रक्षा करेंगे| इस उद्देश्य से 1927 में नगर के गणमान्य नागरिकों, गल्ला-व्यापारियों तथा रामलीला-समिति की राय से 'धर्मदा रक्षिणी सभा' की स्थापना की गई| इस प्रकार कोंच की रामलीला 1927 से आज तक धर्मदा रक्षिणी सभा की उपसमिति के रूप में कार्य कर रही है|

कोंच के रामलीला की अनेक विशेषताएँ काशी की 'असी की रामलीला' से मिलती-जुलती हैं| जिस प्रकार असी की रामलीला में लंका के दृश्यों व अभिनय स्थल को लंका नाम से पुकारते-पुकारते उस मुहल्ले का नाम ही लंका हो गया, उसी प्रकार कोंच के किष्किन्धा के दृश्य-मंचन वाला एक टीला तथा उसके चारो ओर का इलाका जनता द्वारा 'किष्किन्धा' ही कहा जाने लगा| जिस प्रकार असी की रामलीला में गंगा पार लीला का मंचन दुर्गाकुंड में होता है, उसी प्रकार कोंच की रामलीला का मंचन नगर के बीचो-बीच बने विशाल सरोवर 'सागर तालाब' में होता है| यह तालाब चारो ओर पक्के घाटों तथा सीढ़ियों से घिरा है| कोंच की रामलीला में सर्वजाति समन्वय की दृष्टि से अनेक कार्य आवंटित किए गये| एक सौ साठ वर्ष तक वह कार्य उसी परिवार के सदस्यों द्वारा पीढ़ियों दर-पीढ़ियों संपादित किए जा रहे हैं|

यथा- 1-रावण, मेघनाद, जटायु के डील बनाने का काम 160 वर्षों से एक मुस्लिल परिवार की पाँच-छः पीढ़ियों द्वारा किया जा रहा है|

2-श्रीराम के तीर तथा रावण मेघनाद के गढ़ला बनाने का काम 160 वर्षों से एक पांचाल परिवार द्वारा किया जाता है| वर्तमान में उसके वंशज श्री बप्पी लहरी पांचाल हैं|

3-मारीच का 'कंचन मृग' स्वरूप कुशवाहा परिवार द्वारा प्रदत्त सींगों द्वारा आज भी परंपरागत ढंग से बनाया जा रहा है| उसके वर्तमान वंशज श्री छोटे कुशवाहा हैं|

4-श्री रामेश्वर स्थापना हेतु पुष्प एक माली परिवार लाता रहा है|

5-दशहरे के मेलों में विमान तथा रथ 'कहारों' द्वारा खींचा जाता है|

इस प्रकार कोंच की रामलीला आनुष्ठानिक, पारंपरिक तथा अनेक जातियों के समन्वय पर आधारित है| उसका एक सौ साठ वर्षों का इतिहास आज भी इन विशेषताओं का साक्षी है|

चित्रकूट की रामलीला: चित्रकूट में रामलीला का मंचन फरवरी माह के अंतिम सप्ताह में किया जाता है और सिर्फ पाँच दिनों के लिए ही रामलीला का मंचन होता है| इसकी शुरुआत महाशिवरात्रि से होती है| चित्रकूट मैदान में दुनिया की सबसे पुरानी मानी जाने वाली रामलीला का मंचन होता है| माना जाता है कि यह रामलीला 475 वर्ष पहले शुरू हुई थी| कहा जाता है कि चित्रकूट के घाट पर ही गोस्वामी तुलसीदास जी को अपने आराध्य के दर्शन हुए थे| जिसके बाद ही उन्होंने श्रीरामचरितमानस की रचना आरंभ की थी| चित्रकूट की रामलीला भारत में इसलिए भी प्रसिद्ध है, क्योंकि रामलीला के पात्र यहाँ साल दर साल रामलीला को सजीव बनाते रहते हैं| रामलीला में तकनीकी प्रयोग से पात्रों की भावनाओं का इजहार कराया जाता है| जिससे भक्त पात्रों और उनके मर्म को समझ कर उनसे प्रेरणा प्राप्त कर सके| चित्रकूट के कलाकार नृत्य, संगीत में निपुण होते हैं जो तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस पर अभिनय भी करते हैं| सिर्फ इतना ही नहीं कलाकारों की आवाज को प्रभावी बनाने के लिए विशेष यंत्रों का भी प्रयोग किया जाता है|

प्रयागराज की रामलीला: प्रयागराज में रामलीला की शुरुआत कर्ण घोड़े की भव्य और आकर्षक शोभायात्रा से होती है| इस शोभायात्रा में दर्जनों बैंड पार्टियाँ शामिल होती हैं, जिसमें भांगड़ा करते कलाकार आकर्षक रोड लाइट्स और झांकियों के बीच रामलीला के शुरू होने की सूचना देते हुए लोगों को आमंत्रित करते हैं| इस दृश्य को देखने के लिए दुनिया भर में दूर-दूर से लोग आते हैं| विशेष बात यह है कि भगवान राम का दूत कहे जाने वाले कर्ण घोड़े की लोग रास्ते भर आरती और पूजा अर्चना करते हैं| यह परंपरा प्रयागराज में बहुत पुरानी रही है| ऐसा भी माना जाता है कि कर्ण घोड़े के कारण ही भगवान राम की लीला लोगों तक पहुँची और उसी के परिणामस्वरूप आज दुनिया भर में रामलीला का मंचन किया जाता है| शोभायात्रा के बाद अगले दिन से यहाँ दस दिनों तक रामलीला का मंचन किया जाता है| इसमें ढाई सौ से ज्यादा कलाकार और टेक्नीशियन शामिल होते हैं|

कानपुर की रामलीला: कानपुर शहर में वैसे तो रामलीला का मंचन शास्त्रीनगर, अमीपुर, जाजमऊ और कल्याणपुर में होता ही रहता है, किन्तु परेड में सबसे पुरानी 146वीं रामलीला वर्तमान में भी आकर्षण का केंद्र बनी हुई है| यहाँ पहले दिन से ही दर्शकों की भीड़ उमड़ने लगती है| 25 सितंबर 2023 को यहाँ मुकुट पूजन से रामलीला की शुरुआत हुई और प्रतिदिन अलग-अलग प्रसंगों की लीला का क्रम जारी है| पहले दिन नारद मोह, रामजन्म और प्रभु की बाल लीलाओं का मंचन किया गया| बालरूप प्रभु श्रीराम को गोद में लेकर माता कौशल्या, कैकेयी और सुमित्रा ने दुलार किया| अगले दिन ताड़का वध, फुलवारी लीला एवं गौरीपूजन का मंचन किया गया| धनुष यज्ञ, परशुराम-लक्ष्मण संवाद की लीला मंचन ने दर्शकों में शमां बाँध दिया| प्रभु श्रीराम ने शिवधनुष तोड़ा और पुष्प वर्षा से सारा पांडाल गूँज उठा|

कानपुर की रामलीला में कैकेयी कोपभवन तथा श्रीराम वनवास लीला के मंचन ने तो दर्शकों को भावुक कर दिया था| केवट संवाद, चित्रकूट वास, दशरथ मरण एवं भरत मिलाप जैसे दृश्यों का मंचन बड़ी कुशलता और उत्साहपूर्वक किया जाता है| केवट संवाद सुनकर तो दर्शक भक्ति भाव से विभोर हो उठते हैं| कबंध वध, शबरी मिलन, हनुमान मिलन, सुग्रीव-राम मित्रता, बालि वध और लंका दहन जैसे दृश्य कानपुर की रामलीला के आकर्षण के केंद्रबिंदु माने जाते हैं| शरणागत विभीषण, सेतुबंध रामेश्वर स्थापना लक्ष्मण शक्ति और कुंभकरण वध जैसे दृश्य भी कानपुर की रामलीला में मन मोह लेते हैं| कानपुर में सौ से भी अधिक जगहों पर रामलीला आयोजित की जाती है, किन्तु इस शहर के परेड मैदान में जो रामलीला होती है, उसका इतिहास बड़ा ही अनूठा और रोचक भी है| एक सौ पैंतालीस साल पुरानी इस रामलीला में कभी एक ऐसा भी समय था जब इस मैदान पर अंग्रेज भी दर्शक बनकर रामलीला देखने आया करते थे| दरअसल ब्रिटिश काल में परेड ग्राउंड पर अंग्रेजों की परेड होती थी| उसके बाद जबसे रामलीला शुरू हुई तब से लेकर आज तक वहां रामलीला देखने वालों की संख्या में वृद्धि होती गई|

कुमाऊँ की रामलीला: सांस्कृतिक परंपरा की दृष्टि से उत्तराखंड एक समृद्ध राज्य है| समय-समय पर यहाँ के कई इलाकों में अनेक पर्व और उत्सव मनाये जाते हैं| लोक और धर्म से जुड़े इन उत्सवों की आस्था समाज के साथ बहुत गहराई से जुडी है| उत्तराखंड के कुमाऊँ अंचल की रामलीला और होली का इस संदर्भ में विशेष महत्त्व है| कुमाऊँ अंचल में रामलीला नाटक के मंचन की परंपरा का इतिहास 160 साल से भी अधिक पुराना है|

“जय राम रमा रमनं समनं, भवताप भयाकुल पाहि जनं|

अवधेश सुरेश रमेश विभो, शरनागत माँगत पाहि प्रभो||”

यहाँ की रामलीला मुख्यतया गीत-नाट्य शैली में प्रस्तुत की जाती है| मौखिक परंपरा पर आधारित यहाँ की रामलीला पीढ़ी दर पीढ़ी समाज में रचती बसती है| आज से आठ-नौ दशक पूर्व पहाड़ी इलाकों में आवागमन, संचार और बिजली आदि की सुविधाएँ बहुत सीमित मात्रा में उपलब्ध थी| यहाँ के स्थानीय बुजुर्ग तब उस समय रामलीला का मंचन रात को मशाल, लालटेन व पेट्रोमैक्स तथा चीड़ के छिलकों की रौशनी में करते थे कुछ जगहों पर तो दिन के उजाले में रामलीला का मंचन किया जाता था|| कुमाऊनी रामलीला का सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष इसका सुमधुर संगीत है| समय-समय पर बाहर से आईं भजन मंडलियों, रासलीला मण्डली व नौटंकी तथा पारसी थियेटर में प्रदर्शित धुनों को कालान्तर में शास्त्रीय रागों के प्रारूप में यहाँ के रामलीला गीतों पर ढाला गया है|

इस रामलीला को प्रारंभ करने से पहले सामूहिक स्वर में कलाकारों द्वारा राम वन्दना “श्री रामचन्द्र कृपालु भजमन...का गायन किया जाता है| रामलीला के अनेक दृश्यों में प्रभाव लाने के लिए नेपथ्य से आकाशवाणी से उद्घोषणा भी की जाती है| नाटक मंचन में दृश्य परिवर्तन के दौरान जो समय रिक्त रहता है उसकी भरपाई के लिए मंच पर विदूषक भी उपस्थित होता है| विदूषक अपने हास्य पूर्ण गीतों व अभिनय से रामलीला के दर्शकों का मनोरंजन तो करता ही है साथ ही वह समसामयिक प्रसंगों पर कटाक्ष भी करता है|

कुमाऊँ के रामलीला की एक और महत्त्वपूर्ण विशेषता यह भी है कि इसमें अभिनय करने वाले सभी के सभी पुरुष पात्र ही होते हैं| आधुनिक बदलाव में अब कुछ जगह की रामलीलाओं में कोरस गायन, नृत्य के अलावा कुछ विशेष प्रसंगों के अभिनय में महिलाओं को भी शामिल किया जाने लगा है| कुछ ऐतिहासिक और सांस्कृतिक अध्ययन में डॉ. मथुरादत्त जोशी उल्लेख करते हैं कि कुमाऊँ की रामलीला में अभिनय आंगिक, वाचिक, सात्विक एवं आहार्य अभिनय के रूप में विद्यमान है| शरीर के अंगों यथा सिर, हस्त, उर, पार्थ, कटि व पैर के अलावा आँख, नाक, अधर, कपोल व ठोडी द्वारा आंगिक अभिनय को सुन्दरता के साथ प्रस्तुत किया जाता है| कुमाऊनी रामलीला में बोले जाने वाले संवादों धुन, लय, ताल व सुरों में पारसी थियेटर की छाप साफ़ दिखाई देती है| इसके साथ ही ब्रज के लोकगीतों तथा नौटंकी की मिली-जुली झलक भी यहाँ की रामलीला में मिलती है| संवादों में आकर्षण व प्रभाव लाने के लिए कहीं-कहीं पर नेपाली भाषा व उर्दू की गजल का प्रयोग भी किया जाता है| कुमाऊँ की रामलीला में स्थानीय बोलचाल के सरल शब्द चलन में लाए जाते हैं| संस्कृति के जानकार लोगों के अनुसार कुमाऊँ में रामलीला नाटक के मंचन की सर्वप्रथम शुरुआत 1860 में मानी जाती है| जिसका श्रेय तत्कालीन डिप्टी कलेक्टर स्व.देवीदत्त जोशी को दिया जाता है|

कुमाऊँ की रामलीला में बरेली के लोकप्रिय कथावाचक पंडित राधेश्याम जी की रामायण गान शैली समावेशित है| राधेश्याम तर्ज के नाम से प्रचलित यह तर्ज कर्णप्रिय लगती है| हारमोनियम की सुरीली धुन और तबले की गमकती गूँज में अभिनय करने वाले पात्रों का गायन बेहद कर्णप्रिय लगता है| संवादों में रामचरितमानस के दोहों व चौपाईयों के अलावा कई जगह पर गद्य रूप में संवादों को प्रयोग में लाया जाता है| मुख्य बात तो यह है कि यहाँ की रामलीला में गायन को अभिनय की अपेक्षा अधिक महत्त्व दिया जाता है| रामलीला के जानकार लोगों की यह मान्यता रही है कि अल्मोड़ा से पहले 1830 में स्व. देवीदत्त जोशी ने पारसी नाटक के आधार पर उत्तर-प्रदेश के बरेली अथवा मुरादाबाद में कुमाऊनी तर्ज पर रामलीला आयोजित करवाई| कुछ लोग अल्मोड़ा के बद्रेश्वर मन्दिर की रामलीला को आयोजित करवाने में स्व. बद्रीदत्त जोशी की महत्त्वपूर्ण भूमिका मानते हैं|

विदेशों में रामलीला: एक आदर्श चरित्र के रूप में राम की स्वीकृति भारत से बाहर भी है| रामलीला का मंचन सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि दक्षिणी और दक्षिण-पूर्वी एशिया के लगभग सभी देशों में किसी न किसी रूप में होता है| कहीं रामलीला का मंचन कठपुतली के रूप में होता है, तो कहीं नृत्य नाटिका के रूप में| इंडोनेशिया, फिजी, सूरीनाम, मारीशस, कंबोडिया, नेपाल, श्रीलंका एवं बांग्लादेश में भी रामलीला का मंचन बड़े ही हर्षोल्लास के साथ होता है|

इंडोनेशिया की रामलीला: इंडोनेशिया की रामायण का आरंभ भगवान राम के जन्म से होता है, जबकि विश्वामित्र के साथ राम और लक्ष्मण के प्रस्थान में समस्त ऋषि गणों की ओर से मंगलाचरण किया जाता है और दशरथ के घर इस ज्येष्ठ पुत्र के जन्म के साथ ही हिंदेशिया का वाद्ययंत्र गामलान बजने लगता है| वहीं नौसेना के अध्यक्ष को लक्ष्मण कहा जाता है| जबकि सीता को 'सिंता' और हनुमान को इंडोनेशिया का सबसे लोकप्रिय पात्र माना जाता है| हनुमान जी की इस लोकप्रियता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि आज भी हर साल मुस्लिम आबादी वाले देश के आज़ादी के जश्न के दिन अर्थात 27 दिसंबर को बड़ी

भारी संख्या में राजधानी जकार्ता की सड़कों पर युवा हनुमान जी का वेश धारण कर सरकारी परेड में शामिल होते हैं| हनुमान को इंडोनेशिया में 'अनमोल' कहकर बुलाया जाता है|

रामायण का यहाँ इतना गहरा प्रभाव है कि आज भी देश के कई क्षेत्रों में रामायण के अवशेष और पत्थरों पर नक्काशी पर रामकथा के चित्र यहाँ मिलते हैं| इंडोनेशिया दुनिया का चौथा सबसे अधिक आबादी वाला देश भी है| 1973 में यहाँ की सरकार ने एक अंतर्राष्ट्रीय रामायण सम्मेलन का आयोजन करवाया था| यह अपने आप में दुनिया का सबसे अनूठा आयोजन था, क्योंकि पहली बार किसी मुस्लिम देश ने हिन्दुओं के सबसे पवित्र ग्रन्थ रामायण पर इस तरह का आयोजन करवाया था| भारत की तरह ही इंडोनेशिया में रामायण सर्वाधिक लोकप्रिय काव्य ग्रन्थ है| भारत में राम की नगरी जहाँ अयोध्या है, वहीं इंडोनेशिया में यह 'योग्या' के नाम से स्थित है| यहाँ रामकथा को ककनिन या 'काकावीन रामायण' के नाम से जाना जाता है| भारतीय प्राचीन सांस्कृतिक रामायण के रचयिता आदिकवि वाल्मीकि हैं तो वहीं इंडोनेशिया में इसके रचयिता कवि योगेश्वर हैं| इंडोनेशिया के जावा में प्रम्बनान मंदिर में राम की यह लीला तकरीबन साल भर चलती है| यह रामकथा पर आधारित एक 'बैले डांस' अर्थात नृत्य नाटिका है, जिसमें एक समय में 200 से भी ज्यादा कलाकार हिस्सा लेते हैं| कलाकारों की संख्या कभी-कभी आठ सौ से भी ज्यादा हो जाती है| सीता हरण और मारीच मरण जैसे दृश्य यहाँ भी दिखाए जाते हैं|

फिजी की रामलीला: फिजी की चालीस प्रतिशत आबादी हिन्दू की है और भारत से अंग्रेजी राज्य के समय वहां शिफ्ट हुई है| त्योहारों में यहाँ भी रामलीला का बड़ा ही भव्य मंचन होता है| लीला की सारी कहानी वाल्मीकि रामायण और रामचरितमानस के आसपास ही बुनी जाती है| इसके मंचन में पात्रों की सुन्दरता का विशेष ध्यान रखा जाता है| फिजी में 300 द्वीपों का एक ऐसा समूह है जहाँ कई सालों से लगातार रामलीला होती चली आ रही है| महत्त्वपूर्ण बात यह है कि यहाँ हर एक बस्ती की अपनी-अपनी रामायण मंडली है जो रामायण की संस्कृति और मूल्यों को कला के माध्यम से उकेरती है|

सूरीनाम की रामलीला: सूरीनाम में डच प्रभाव के चलते भगवान राम 'रामत्जांद्रे' हो जाते हैं, जबकि सीता 'सियेता' हो जाती हैं| रामायण के सभी पात्र इसमें जब हिंदी तथा डच की खिचड़ी भाषा बोलते हैं तब देखने वालों के सामने एक अनोखा माहौल तैयार हो जाता है| नई तकनीकी का प्रयोग भी इसमें ख़ूब होता है और जगह-जगह इसका सीधा प्रसारण भी किया जाता है| यह सूरीनाम में बहुत ही लोकप्रिय है| सूरीनाम की रामलीला को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिली है और इसे भारत में भी खूब सराहा गया है| सन 2019 में प्रयाग के कुंभ के मेले में सूरीनाम के कलाकारों द्वारा रामलीला प्रसंगों के मंचन की काफी चर्चा हुई| इसमें राम-वनगमन, भरत-मिलाप, बालि-सुग्रीव युद्ध और लंका में हनुमान प्रसंगों का भी मंचन किया गया|

मॉरीशस की रामलीला: मॉरीशस में रामलीला मंचन की बहुत ही पुरानी परंपरा है| यहाँ झाल और ढोलक पर रामायण गीत भी काफी प्रचलन में है| मॉरीशस सनातन धर्म मन्दिर संघ और मॉरीशस कला संस्कृति मंत्रालय रामलीला परंपरा को देश में बढ़ावा देते हैं| मॉरीशस अंतर्राष्ट्रीय रामायण सम्मेलन की मेजबानी भी कर चुका है| मारीशस में रामलीला का आयोजन अयोध्या शोध संस्थान उत्तर-प्रदेश, केंद्र सरकार के संस्कृति मंत्रालय और रामायण सेंटर मॉरीशस के संयुक्त तत्त्वावधान में मॉरीशस में ही आयोजित की जाती है|

मॉरीशस के विश्वनाथ मन्दिर पिटोन में अयोध्या की रामलीला द्वारा पारंपरिक रामलीला की प्रस्तुति की जाती है| अयोध्या की रामलीला दल के कलाकारों द्वारा कला और संस्कृति मंत्रालय मॉरीशस के प्रेक्षागृह में वहां के बच्चों और युवाओं को रामलीला के विभिन्न प्रसंगों, मेकअप, वेशभूषा आदि का प्रशिक्षण दिया जाता है|

कंबोडिया की रामलीला: कंबोडिया बौद्ध देश के रूप में जाना-पहचाना जाता है, किन्तु यहाँ हिन्दू कल्चर की भी छाप देखने को मिलती है| कंबोडिया के रामायण को 'Reamker' भी कहा जाता है, जिसमें भगवान राम को 'Preah Ream' सीता को 'Neang Seda' और लक्ष्मण को 'Preah Leak' के नाम से भी जाना जाता है| इसका चलन थिएटर तक भी फैला हुआ है| कंबोडिया में भी रामलीला के अभिनय का ज्ञान राष्ट्रीय निधि माना जाता है| सामाजिक उत्सवों के दौरान इस लोकप्रिय महाकाव्य का मंचन किया जाता है| वहाँ ऊँचे कुल के सदस्य भी रामलीला के पात्रों की भूमिका करने के लिए लालायित और उत्साहित रहते हैं| कंबोडिया के नरेश की पुत्री राजकुमारी पुष्पा जब सीता के अभिनय के लिए रत्नजड़ित आभूषण तथा रेशम के अति सुंदर वस्त्र पहनकर जब वह मंच पर आती थीं तो दर्शक भी उसे देखकर मंत्रमुग्ध हो जाते थे| रामायण के प्रति उनकी श्रद्धा ने ही उन्हें इतना लोकप्रिय बना दिया कि कलाकर माता सीता के रूप में पुष्पा का ही चित्र बनाने लगे थे|

थाईलैंड की रामलीला: थाईलैंड में रामलीला को 'रामकेयन' नाम से जाना जाता है| यहाँ यह केवल शारदीय नवरात्र का आयोजन न होकर किसी भी विशेष अवसर पर अर्थात पूरे वर्ष भर में कहीं भी कोई भी पारिश्रमिक देकर विवाह या जन्मदिन या किसी अन्य शुभ अवसर पर भी मण्डली बुलाकर रामलीला का मंचन करवा सकता है| यह रामलीला विभिन्न दृश्यों में बंटी न होकर एक ही नृत्य नाटिका की तरह होती है| यहाँ 'रामकेयन' की कहानी तो रामायण वाली ही रहती है, लेकिन वेशभूषा व पात्रों के नामों में बहुत कुछ बदलाव भी होता है| चमचमाते आकर्षक वस्त्रों तथा आभूषणों के अलावा हर पात्र का मुकुट एक निर्धारित आकार का रहता है, जिसे देखते ही स्थानीय लोग पात्रों को पहचान लेते हैं|

विलुप्त होती रामलीला: भगवान राम के वियोग में अयोध्यावासियों के उनकी बाल लीलाओं के मंचन से शुरू हुई रामलीला की परंपरा टेलीविजन और अन्य माध्यमों से हावी हुई आधुनिक जीवन शैली, कलाकारों को प्रोत्साहन न मिलने एवं अपसंस्कृति के बढ़ते दबाव में लुप्त होती जा रहा है| प्रेम, भाईचारा, सद्भाव एवं सहिष्णुता को बढ़ावा देने के लिए दशहरा के शुभ अवसर पर पूरे उत्तर भारत और बिहार में राम लीलाओं के मंचन की परंपरा का स्थान अब फूहड़ सिनेमा और घटिया कार्यक्रमों ने ले लिया है| स्थिति ऐसी आ गई है कि कई मंचों पर अब रामलीला की जगह रामानन्द सागर के टी.वी धारावाहिक 'रामायण' की विडियो दिखाई जाती है| रामलीला का मंचन करने वाले ही कई कलाकारों के साथ संवाद करने के बाद यह पता चलता है कि पहले गाँवों में दशहरा पर रामलीला मंचन के लिए लोग दो-दो महीने तक अभ्यास किया करते थे| इस दौरान न केवल आपस में प्रेम बढ़ता था, बल्कि रामलीला के प्रेरक प्रसंगों को देख-सुनकर लोगों में भी मर्यादित आचरण अपनाने का सन्देश भी जाया करता था|

जब तक यह रामलीला मंचन की परंपरा रही तब तक गाँवों में उग्रवाद का नामोनिशान नहीं था और दशहरा के पर्व पर लोग मिल-जुलकर ख़ुशी बाँटा करते थे| हालाँकि दशहरा के मौके पर गाँवों की रामलीला कमेटियों

द्वारा बनारस, मथुरा, वृन्दावन, अयोध्या, कोंच, कानपुर, प्रयागराज, कुमाऊँ, कोलकाता तथा दिल्ली की मशहूर रामलीला मंडलियों को रामलीला की प्रस्तुति के लिए बुलाने का रिवाज था, जो कि अब प्रायः समाप्त होता जा रहा है| इस संदर्भ में जाने-माने नाटककार शंभूनाथ जी का यह कहना है कि पहले रामलीला के कलाकारों को गाँवों में इज्जत मान-सम्मान दिया जाता था, वहीं ग्रामीण समाज के भी शहरीकरण के रंग में रंग जाने के कारण उन्हें अब रामलीला में भोंड़े प्रदर्शनों के लिए मजबूर किया जाता है| इससे कलाकारों के आत्म सम्मान और रामलीला की भावना को भी ठेस पहुँचती है| यह भी एक कारण है कि कलाकारों का रामलीला के प्रति झुकाव बहुत कम होने लगा है|

एक समय ऐसा भी था जब गाँव-गाँव में दशहरा के आगमन के कई माह पूर्व ही रामलीला के खेल के लिए रामलीला कमिटियाँ गठित होने लगती थीं, वहीं अब ऐसी कमेटियाँ गाँवों में बिरले ही नजर आती हैं| उत्तर भारत और बिहार के बहुत कम गाँवों में अब रामलीला का मंचन होता दिखाई देता है| पहले उत्तर-भारत के कई गाँवों में दशहरा के मौके पर करीब दस-बारह दिनों तक चलने वाली रामलीला के मंचन को देखने के लिए देश के अलग-अलग राज्यों से ही नहीं बल्कि पड़ोसी देश नेपाल से भी काफी अधिक मात्रा में लोग यहाँ आते थे, लेकिन अब न तो वैसी रामलीला रही और न ही उसे दूर-दूर तक जाकर देखने-समझने तथा इसका आनन्द उठाने वाले लोग ही हैं| स्थिति यह है कि गाँवों की नई पीढ़ी यह भी नहीं जानती कि रामलीला है किस बला का नाम? रामलीला के ही कलाकारों का यह कहना है कि अब रामलीला के कद्रदानों में भी तेजी से कमी आई है| पहले जहाँ गुलाम भारत में अंग्रेज भी दशहरा के दिनों में रामलीला के प्रसंगों को घंटों बैठकर देखा करते थे और इतना ही नहीं वे कलाकारों को प्रोत्साहित करने के लिए इनामों से भी नवाजते थे परन्तु अब तो घटिया और भोंड़े प्रदर्शनों पर ही कलाकारों पर पैसों की बौछार की जाती है|

रामलीला के कलाकारों का ही यह कहना है कि पहले केवल दशहरा ही नहीं बल्कि अन्य तीज-त्योहारों पर भी गाँव में रामलीला मंडलियों को प्रस्तुति के लिए बुलाया जाता था लेकिन अब ऐसी स्थिति नहीं रह गई है| इस स्थिति में रामलीला कलाकार इस उपयोगी कला से विमुख होकर अन्य रोजगार अथवा धंधे की ओर उन्मुख हो चले हैं| यही कारण है कि अब देश भर में चंद रामलीला कंपनियाँ ही शेष बची हैं, जिनके द्वारा जैसे-तैसे रामलीला की परंपरा को आगे बढाया जा रहा है| रामलीला की गहरी समझ रखने वाले बुजुर्गों का यह कहना है कि अब तो दशहरा में रामलीला की जगह पर विडियो पर रामानन्द सागर के धारावाहिक रामायण को दिखाए जाने का चलन अधिक बढ़ गया है| उनका यह मानना है कि गाँव में रामलीला का मंचन न होने की मजबूरी में वे रामायण धारावाहिक देखकर ही संतोष कर लेते हैं| किन्तु इससे वे पूर्णरूप से संतुष्ट नहीं हैं| गाँव में हो रही शहरों की नकल, आधुनिकता की दिन-प्रतिदिन पड़ रही छाप, उग्रवादियों की बढ़ती पैठ एवं सामाजिक संरचना में आ रहे बदलाओं के बीच ग्रामीण संस्कृति की पहचान रामलीला का चलन अब धीरे-धीरे लुप्त होता जा रहा है| वहीं भारत सरकार का कला एवं संस्कृति मंत्रालय भी रामलीला के आयोजन और इसके कलाकारों के प्रति बिल्कुल उदासीन है| ऐसे में यदि समय रहते इस कला के संरक्षण पर ध्यान नहीं दिया गया तो रामलीला गुजरे जमाने की बात होती चली जाएगी और यह संस्कृति हमारे भीतर से लुप्त हो जाएगी, इसमें तनिक संदेह नहीं|

राम नाईक ने रामायण को अद्भुत कथा बताते हुए कहा है कि राम का व्यक्तित्त्व हिमालय से भी ऊँचा एवं समुद्र से भी अधिक गहराई लिए हुए है| इसे सभी ने अपने-अपने ढंग से व्यक्त किया है| पुरानी एवं विलुप्त होती संस्कृति के माध्यम से रामायण का मंचन एवं नाट्य द्वारा प्रस्तुतीकरण अत्यंत ही अनुकरणीय है| यह आश्चर्य का विषय है कि इनकी कथाएँ इंडोनेशिया तथा थाईलैंड जैसे अन्य देशों में भी प्रचलित एवं लोकप्रिय हैं| यह नौटंकी एवं कत्थक का संगम दिखाने का अद्भुत प्रयास है| कला के माध्यम से जीवन में सम्मान एवं ऊँचाईयों को प्राप्त किया जा सकता है| श्रीराम मर्यादा पुरुषोत्तम थे, उनकी लीला या कथा का मंचन मनोरंजन के साथ ही प्रेरणादायक होता है| रामलीला मंडली के व्यास जवाहरलाल शास्त्री कहते हैं कि विदेश में तो सरकार ने गीता और रामायण की शिक्षा को अपने पाठ्यक्रम में शामिल कर लिया है| विदेशों से लोग भारत यहाँ की संस्कृति को जानने समझने आ रहे हैं| भारत में रामलीला हो या अन्य लीला सिर्फ औपचारिकता ही निभाई जा रही है| लीलाओं में सीधी भागीदारी की दृष्टि से देखें तो हमें एक सामाजिक ताने-बाने की दिलचस्प तस्वीर बनती दिखाई देती है| राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न और सीता के मुख्य स्वरूपों के लिए यज्ञोपवीत धारी ब्राह्मण को ही चुना जाता है| लीलाओं में न्यास, रामायणी, सगारिया और भजन मंडली सभी की अहम भूमिका होती है|

दस दिवसीय रामलीला की रूपरेखा:

पहला दिन: पृथ्वी पुकार, पुत्र दृष्टि यज्ञ, प्रभु श्रीराम जन्म का मंचन|

दूसरा दिन: मुनि आगमन, मारीच सुबाहु वध|

तीसरा दिन: अहल्या उद्धार, गंगा अवतरण, नगर दर्शन, फुलवारी में सीता-राम का प्रथम मिलन|

चौथा दिन: रावण-बाणासुर संवाद, स्वयंवर, राजा जनक का विलाप, शिव धनुष का राम द्वारा खंडन|

पांचवां दिन: राम-परशुराम संवाद, सीता-राम विवाह|

छठवाँ दिन: राम वनवास, दशरथ प्रतिज्ञा, मंथरा-कैकेयी संवाद, दशरथ-कैकेयी संवाद|

सातवाँ दिन: केवट-राम संवाद, अनुसूया-सीता उपदेश, सीता हरण|

आठवाँ दिन: राम-हनुमान भेंट, लंका दहन|

नौवाँ दिन: रामेश्वरम स्थापना, अंगद-रावण संवाद, लक्ष्मण शक्ति, कुंभकरण, मेघनाद वध|

दसवाँ दिन: रावण वध, राम राज्याभिषेक|

निष्कर्ष:

रामलीला के पूरे आयोजन में दो से तीन लाख रूपये का खर्च बैठता है| आज रामलीला आयोजित करने के लिए दो तरह की कठिनाईयाँ हमारे सामने आ रही है, एक तो आधुनिक चकाचौंध और दूसरा युवाओं का अपनी भारतीय संस्कृति को भूलना| आज हम समय के साथ चलते हुए लीला में इस तरह का बदलाव कर रहे हैं, जो समसामयिक हो और जिसमें युवाओं का भी मनोरंजन हो सके| रामलीला हमारे जीवन में उसी तरह शामिल है जिस तरह से परिवार के मांगलिक कार्य हुआ करते हैं| पहले ही रामलीला मंडली में काफी संख्या में बच्चे और युवा संस्कृत की शिक्षा लेने आते थे| अब तो रामलीला के जानकार और कलाकार भी न के बराबर हैं| लोगों को अपने सनातन धर्म के प्रति जागरूक होंना पड़ेगा| सरकार को अपने स्तर से इस प्रकार की व्यवस्था करनी होगी कि किताबी और तकनीकी ज्ञान के साथ बच्चों को वैदिक और सांस्कृतिक शिक्षा भी मिले ताकि आने वाले समय में रामलीला को विलुप्त होने से बचाया जा सके|

रामलीला की विलुप्तता और उसके मंचन के संदर्भ में यह पता चलता है कि प्रायः रामलीला का मंचन नवम्बर-दिसंबर के महीने में होता था| रामलीला की तैयारियां होते ही बच्चे बहुत आनंदित-प्रफुल्लित होते थे| तब रौशनी की व्यवस्था भी पेट्रोमैक्स से होती थी, मंच लकड़ी के स्लीपरों से बनाया जाता था| दरियों की व्यवस्था होती थी, स्त्रियों एवं पुरुषों के लिए अलग-अलग बैठक की भी व्यवस्था होती थी| स्वयंसेवी भी रामलीला में अनुशासन की व्यवस्था करते थे, रामलीला मंचन के दौरान शांति व्यवस्था, प्रकाश व्यवस्था, पात्रों के चाय-पानी की व्यवस्था तथा मंच पर रामलीला कहाँ से कहाँ तक होने की घोषणा करने वाला उद्घोषक आदि एक सुव्यवस्थित तरीके से अपना-अपना दायित्त्व निभाते हैं| जब रामलीला में श्रीराम के विवाह का दिन होता था, तब ऐसा प्रतीत होता था मानो सचमुच किसी की शादी हो रही हो, रामचन्द्र जी की बारात में लगभग सारा मुहल्ला शिरकत करता था| महिलाएं भी भगवान श्रीराम की बारात में फूल बरसाती थीं| सारा का सारा इलाका राममय हो जाता था| हारमोनियम टेबल की संगत में रामलीला की चौपाईयां लय ताल के साथ गाई जाती थीं|

सीता स्वयंवर हो या परशुराम-लक्ष्मण संवाद, बाली-सुग्रीव का युद्ध हो या अशोक वाटिका में हनुमान जी का उत्पात, सीता हरण हो या मेघनाद-लक्ष्मण युद्ध, राम वन गमन का दृश्य हो या कैकेयी का कोप भवन, दशरथ का विलाप आदि दृश्य रामलीला के संपूर्ण साहित्य व रस से सराबोर होते थे| रामलीला के पात्रों के प्रति भगवान जैसी ही श्रद्धा रखी जाती थी| रामलीला मंचन के दौरान पात्र भी बुरी आदतों यथा-बीड़ी, सिगरेट, पान, तंबाकू शराब, भांग आदि से परहेज रखते थे, ताकि जिस पात्र को वे अभिनीत करें वे वास्तविक पात्र के नजदीक जान पड़ें| भावुक दृश्यों में महिलाओं की सिसकियाँ रामलीला के प्रति उनकी भक्ति भावना का परिचायक होती थी| रामलीला परंपरा एक ऐसी परंपरा थी कि जिसमें लोग स्वेच्छा से रामलीला के मंचन में कपडे, पैसे, सामान इत्यादि से भी सहायता करते थे तथा भारतीय संस्कृति के इस वाहक परंपरा का निर्वाह करते थे|

कालान्तर में समय के साथ-साथ मनोरंजन के साधनों में अत्यधिक प्रगति हो जाने पर रामलीला के प्रति लोगों का झुकाव कम होता गया| इस रामलीला को कुछ लोग आधुनिकता परस्त समय की बर्बादी व अनावश्यक

मानते हैं| लेकिन आज भी ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में रामलीला मंचन होता है| आधुनिक वाद्ययंत्रों, प्रकाश व्यवस्था से रामलीला का भव्य रूप हो गया है| कॉमिक का स्थान फ़िल्मी गीतों व नृत्यों ने ले लिया है,बावजूद इसके कहीं-कहीं रामलीला का वर्चस्व कायम है| आज प्रोफेशनल लोग रामलीला में काम करने का पारिश्रमिक ले रहे हैं| फिर भी भक्ति-भावना से ओत-प्रोत लोग रामलीला को मनोरंजन का सर्वमान्य हल देखते हैं| दो-तीन दशक पहले तक रामलीला का मंचन गाँव के प्रबुद्ध लोगों द्वारा किया जाता था, किन्तु आज प्रोजेक्टर के माध्यम से रामलीला का दृश्य दिखाया जाने लगा है| इसके चलते दिनोदिन पुरानी रामलीला परंपरा धीरे-धीरे विलुप्त होती जा रही है| पहले गाँव के पढ़े-लिखे लोग राम-सीता, ऋषि-मुनि, रावण, विश्वामित्र, दशरथ, हनुमान आदि की भूमिका निभाते थे| रामायण के जानकार ही इस रामलीला के संचालन का भी काम करते थे| कई दशक पहले जब भारत में टी.वी, कंप्यूटर, इन्टरनेट और मोबाइल नहीं हुआ करते थे, तब मनोरंजन का साधन नाच, रामलीला और रासलीला ही हुआ करती थी, पर अब हर किसी के पास ये संसाधन मौजूद हैं, जिसके कारण आज शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में रामलीला की परंपरा खत्म होने की कगार पर आ गई है| विलुप्त होती रामलीला को कायम रखने के लिए आज भी कुछ लोग इसका मंचन कर रहे हैं| आज रामलीला का स्वरूप चाहे जैसा भी हो, रामलीला हमारे संस्कारों व चरित्र में रची-बसी है| इस समृद्ध परंपरा को हमें सुरक्षित-संरक्षित रखना होगा, जिससे आज की इस सिनेमाई संस्कृति में यह परंपरा विलुप्त न हो|

संदर्भ ग्रन्थ:

१- लोक रामकथा, संपादक श्यामसुन्दर दुबे, पृष्ठ-116, लोकभारती प्रकाशन इलाहबाद, 2010
२- स्मारिका, 2014, नमामि रामम, पौड़ी, श्रीरामलीला मंचन एवं सांस्कृतिक समिति, पृष्ठ-18
३- कुमाऊनी रामलीला एक ऐतिहासिक सांस्कृतिक अध्ययन, जोशी मथुरादत्त, पृष्ठ-27 नैनीताल, 2007
४- कुमाऊँ अंचल में रामलीला की परंपरा, तिवारी चन्द्रशेखर, पृष्ठ-210, देहरादून, 2011
५- श्रीरामलीला एक अध्ययन, श्री भानुशंकर मेहता, पृष्ठ संख्या-38
६- रूस में रामायण, अलेक्जेंडर सेंकोविच, पृष्ठ संख्या-85
७- रामलीला परंपरा और शैलियाँ, अवस्थी डॉ. इंदुजा, पृष्ठ-156 अक्टूबर 2013
८- रामलीला: कितने रंग कितने रूप, तिवारी चन्द्रशेखर, पृष्ठ-77 अक्टूबर 2013
९- श्री रामनगर रामलीला, भानुशंकर मेहता, पृष्ठ-24 लोकभारती प्रकाशन 2015

डॉ. महात्मा पाण्डेय

सह-अध्येयता भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान शिमला

मो.न. 8454028185

ईमेल-mahatmapandey1982@gmail.com